“ फकीर ”

फकत एक अल्लाह ही,

वही हो मुर्शिद, पीर।

यीर, उसी की ही सदा,

ताको कहत फकीर।।

सतगुरु के संसार में,

सबसे बड़ा फकीर।

राजा, परजा झुके सब,

बदल देय तक़दीर।।

इस संसार में आयकर,

खोजो सत्य फकीर।

पैगम्बर भी वही है,

दाता वही है पीर।।

सब समझें वह माँगता,

दाता जाने नहिं कोय।

इसी भरम में जग फंसा,

लाभ तो कैसे होय।।

राजा, महराजा, देवता,

ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

कोई नहीं फकीर सम,

सबका वही है शीश।।

दिल जीतना फकीर का,

और न कोई उपाय।

होय समर्पित स्वयं वह,

जो सोंचों वह पाय।।

शब्दार्थ :-

फकत = केवल

यीर = सुरक्षा, दया, सहायता

पीर = बड़ा

मुर्शिद = मार्गदर्शक,पथप्रदर्शक, गुरू

पैगम्बर = संदेशवाहक

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)